राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा
पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय, पटना

विषय - राजनीति विज्ञान (स्नातक तृतीय खंड प्रतिष्ठा)

पाठ - लोक प्रशासन : परिभाषा एवं क्षेत्र

डॉ० उमेश चन्द्र शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान, आर० आर० एम०
कॉलेज, मोकामा

वर्तमान समय में लोकप्रशासन का महत्व बढ़ता जा रहा है। व्यक्ति, समाज तथा राज्य का कोई भी ऐसा समस्या या पक्ष नहीं है जो सीधे लोकप्रशासन से जुड़ा नहीं है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कानून एवं व्यवस्था, आर्थिक क्रियाएँ, वैदेशिक संबंध, सुरक्षा, जन कल्याण, कृषि आदि समस्त क्षेत्रों में लोक प्रशासन की प्रत्यक्ष भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

लोकप्रशासन की परिभाषा और अर्थ के साथ इसके अध्ययन क्षेत्र का विश्लेषण आवश्यक है। प्रशासन का अभिप्राय अनुचर या उत्कृष्ट प्रशासन से है। जो 'प्र' उपसर्ग 'शास' में प्रयुक्त होने से बचा है। इसी प्रकार अंग्रेजी शब्द Administration की उत्पत्ति 'ministrare' में 'Ad' उपसर्ग से हुआ है, जिसका प्रयोग सेवा करने के अर्थ में होता है। इस प्रकार लोकप्रशासन का अर्थ शासकीय सुविधा प्रदान करने में प्रयुक्त साधन के रूप में किया जा सकता है। Nigro लिखते हैं— "The real core of administration is the basic service which is performed for the Public" लाइमन के अनुसार, "अपने व्यापक रूप में प्रशासन की व्याख्या उन समस्त सामूहिक क्रियाओं से की जा सकती है जो सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सहयोगात्मक रूप में प्रस्तुत की जाती है।" एल० डी० व्हाइट ने स्पष्ट करते हुए लिखा है, "लोकप्रशासन में वे समस्त कार्य आ जाते हैं जिनका उद्देश्य लोकनीति को पूरा करना अथवा क्रियान्वित करना होता है।"

इस प्रकार प्रशासन का संबंध जब लोक (Public) या सार्वजनिक से हो जाता है तो वह व्यापक रूप में लोकप्रशासन बन जाता है।

Scanned with CamScanner

लोक प्रशासन का क्षेत्र (Scope of Public Administration)

लोक प्रशासन के क्षेत्र के रूप में सामान्यतः चार प्रकार के दृष्टिकोण बतलाये जाते हैं।

(i) व्यापक दृष्टिकोण, (ii) संकुचित दृष्टिकोण
(iii) पोस्डकार्ब दृष्टिकोण (iv) लोककल्याणकारी दृष्टिकोण।

(1) व्यापक दृष्टिकोण – लोकप्रशासन के क्षेत्र से संबंधित व्यापक दृष्टिकोण यह बतलाता है कि इसका संबंध लोकनीति के निर्माण, क्रियान्वयन एवं पूरा करने में प्रशासन की भूमिका से है। अर्थात इसका संबंध – कार्यपालिका, विधायिका एवं न्यायपालिका तीनों अंगों से है। निग्रो ने इसे स्पष्ट करते हुए बतलाया है –

(क) लोक प्रशासन लोक समाज में सहयोगी एवं सामूहिक प्रयास है।
(ख) लोक प्रशासन में कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के परस्पर संबंध शामिल हैं।
(ग) लोक प्रशासन की लोक नीति के निर्माण में मुख्य भूमिका होती है
(घ) लोक प्रशासन निजी स्तर पर समूहों और व्यक्तियों से संबद्ध है।

इस प्रकार लोक प्रशासन का कार्यक्षेत्र काफी व्यापक है। क्योंकि, समाज तथा राज्य के हर आयाम के संदर्भ में इसकी भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।

(2) संकुचित दृष्टिकोण – साइमन जैसे कतिपय विद्वानों ने लोक प्रशासन के क्षेत्र के संबंध में संकुचित दृष्टिकोण अपनाया है। साइमन के अनुसार, "लोकप्रशासन से अभिप्राय उन क्रियाओं से है जो केन्द्र, राज्य तथा स्थानीय सरकारों की कार्यपालिका शाखा द्वारा संपादित की जाती हैं।" इस विचारधारा में प्रशासन को कार्यपालिका का अंग समझा जाता है। इस संदर्भ में प्रशासन के अध्ययन का विषयवस्तु केवल सरकार, उसके संगठन एवं संरचनाएँ, सेवीवर्ग आदि तक सीमित है। इसमें लोक कल्याण, लोक नीति, सामाजिक दायित्व, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों में लोकप्रशासन की भूमिका का नजरअंदाज किया जाता है। इस विचारधारा में "तटस्थ नौकरशाही" नहीं पनप सकती है जिसकी आवश्यकता लोकतंत्र एवं लोककल्याणकारी राज्य में है।

पोस्डकार्ब दृष्टिकोण – लूथर गुलिक ने लोक प्रशासन के क्षेत्र के संदर्भ में पोस्डकार्ब (POSDCORB) दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया। जो अंग्रेजी के सात शब्दों के प्रथम अक्षर का उपयोग करते हुए सुविधा के लिए बनाया गया है। इस सुविधा के कारण यह दृष्टिकोण लोकप्रिय भी है। इसका वर्णन निम्न प्रकार किया जा सकता है।

(I) P (Planning) योजना बनाना – निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए योजना बनाना तथा उसकी प्रक्रिया निर्धारित करना।

(II) O (Organizing) संगठन बनाना – प्रशासकीय ढाँचे को संगठित करना। विभाग में कार्यों का विभाजन एवं समन्वय स्थापित करना।

(III) S (Staffing) सेवीवर्ग की व्यवस्था – सेवीवर्ग की नियुक्ति, प्रशिक्षण एवं अनुकूल सेवा शर्तों का निर्माण।

(IV) D (Directing) निर्णयों के क्रियान्वयन हेतु आवश्यक दिशा निर्देश देना।

(V) CO - (Co-ordination) समन्वय – संगठन के कार्यों, विभिन्न कार्यालयों के बीच समन्वय की स्थापना करना।

(VI) R (Reporting) – इसका उद्देश्य निम्न अधिकारियों द्वारा उच्च अधिकारी को कार्यों की गतिविधि से अवगत कराना है।

(VII) B (Budgeting) बजट – संगठन में कार्य के उद्देश्य की दृष्टि से वित्त व्यवस्था हेतु बजट का निर्माण करना।

आलोचकों ने इस दृष्टिकोण को संकुचित दृष्टिकोण करार बतलाया है। इसमें केवल तकनीकि पक्ष की बात की गई है। मानवीय, सामाजिक तत्त्वों तथा लोककल्याणकारी पक्षों को नजरअंदाज किया गया है। फिर भी 'पोस्डकार्ब' दृष्टिकोण सरलता की दृष्टि से लोकप्रिय है। प्रशासन के हर ईकाई में इन बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है।

4. लोककल्याणकारी दृष्टिकोण – राज्य का स्वरूप लोककल्याणकारी होने के कारण प्रशासन का स्वरूप भी लोककल्याणकारी होना चाहिए। लोककल्याणकारी नीतियों का क्रियान्वयन तबतक संभव नहीं, जबतक प्रशासन भावनात्मक रूप से लोककल्याण

के आदर्श के प्रति समर्पित न हो। वर्तमान समय में लोक प्रशासन की भूमिका एवं क्षेत्र विस्तृत हो गया है। प्रशासन को "मानवीय" पक्ष पर ध्यान देना होता है। आज प्रशासन की जिम्मेदारी सिर्फ कानून और व्यवस्था देखना नहीं है, बल्कि सामाजिक न्याय, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास आदि का भी साधन बनना है। आज प्रशासन का उद्देश्य सुशासन (Good Governance) के लक्ष्य को प्राप्त करना है, विकास की ऊँचाई छूना है तथा विकास की किरणें हर कमजोर वर्ग के लोगों तक पहुँचाना है। यही कारण है कि आज लोक प्रशासन के कई आयामों पर काम हो रहा है। नवीन लोक प्रशासन, विकास लोकप्रशासन, मानवीय लोकप्रशासन आदि। आज तुलनात्मक लोकप्रशासन के माध्यम से भी नये संदर्भों में अध्ययन किया जाता है। आज का लोक प्रशासन "लोकनीति" का अध्ययन करता है। आज इसका दायरा "ग्लोबलकीय प्रशासन" तक फैल चुका है।

इस प्रकार देखा जा सकता है कि प्रशासन की भूमिका लोककल्याणकारी राज्यों में व्यापक होती जा रही है। संक्षेप में कह सकते हैं कि लोकप्रशासन का विषय क्षेत्र सदा विस्तारशील है।

Scanned with CamScanner